सं ग्रो॰ वि॰/कुर./39-86/2019 --चूं कि हरियाणा के राज्यवाल की राध है की मैंठ (1) सचिव, मार्किटींगं बोर्ड, हरियाणा, पंचकूला, (2) भ कींट कमेटी, कैयल के श्रमिक श्री वद्यावा राम, पुत्र श्री ठाकुर राम, गाँव गयोंग, तहसील कैयल, जिला कुम्क्षेत्र तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है।

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविध्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, श्रव, श्रीचोिनक विवाद श्रिधिनयम, 1947 की धारा : कि उपधारा (1) के खर्ड (ग) द्वीरे प्रदर्भ की गर्ह पावितयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना मं० 3(44) 84-3-श्रम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उवत श्रिधसूचना की धारा 7 के श्रिधीन गर्निक श्रम न्यायालय, सम्वाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन गर्य एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निद्धित करते हैं, जो कि उवत प्रवत्यकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है .—

क्या श्री वधावा राम, पुत्र श्री ठाकर राम की सेवाछों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो॰ वि०/गुड़गांव/49-86/20 31.—चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं॰ ग्रानन्द गैस लिमिटिड, प्लाट नं॰ 6, पोस्ट मारूति इण्डस्ट्रीयल ऐरिया, गुड़गांव के श्रीमक श्री शंकर मार्फत श्री पी० के॰ धम्पी, बी॰ II, आई॰ डी॰ पी० एल॰, टाऊनशिप, गुड़गांव तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदौगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, भ्रब, भ्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग)द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रीधसूचना सं० 5415—(3)—श्रम 68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रीधसूचना सं० 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रधसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम ग्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या जससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादगस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला हैं :—

ात्रा श्रो गंहर ही सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं भो वि वि हिसार/162-86/2090.—चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) हरियाणा राज्य सहकारी भूमि विकास बैंक कि, चण्डीगढ़, (2) प्राईमरी को-भ्रोप्रेटिव लैण्ड डिवैल्यमैंट बैंक लिं , सिरसा के श्रमिक श्री गुरदयाल, पुत्र श्री शिवनारायण, गांव व डा० बुरज मांगू, वाया भ्रोजान, तहसील तथा जिला सिरसा तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

मौर चूंकि हरियाण के राज्यकात विवाद को न्यायितिर्णय हैतु निविद्ध करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिसूचना की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच यां तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री गुरदयात, की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

श्रार० एस० अप्रवाल,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।